Alternatives India VIKALP sangam

चाहे टिकाऊ आजीविका और सहभागी अभिशासन का हो, खेती और जंगलों को बचाने का हो, चाहे शिक्षा और शहरी इलाकों के रूपांतरण का हो या महिलाओं, दलितों व समाज के अन्य उत्पीड़ित तबकों के सशक्तिकरण का हो, कोई भी जमीनी प्रयास या आंदोलन विचारों, संस्कृतियों और विश्व दृष्टिकोणों की एक बहुरंगी विरासत अपने भीतर समेटे चलता है। क्या सतही तौर पर अलग-थलग दिखाई देने वाले इन नजरियों और सोचों को एक ऐसी समग्र रूपरेखा में पिरोया जा सकता है जो आज की प्रभुत्वशाली आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का आमूल विकल्प प्रस्तुत कर सके? क्या हम मिल-जुल कर एक वैकल्पिक भविष्य की दृष्टि रच सकते हैं?

इसके लिए ऐसे लोगों, समूहों और आंदोलनों का एक साझा मंच तैयार करना होगा जो अभिनव विकल्पों के लिए प्रयास कर रहे हैं ताकि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय सभाओं और गोष्ठियों के माध्यम से यथास्थिति को सकारात्मक चुनौती दे सकें, एक दूसरे से सीख-बूझ सकें, साझेदारियां बना सकें और वैकल्पिक विश्व दृष्टिकोण पेश कर सकें। आदान-प्रदान के इन अवसरों को हमने विकल्प संगम का नाम दिया है। अभी तक तीन क्षेत्रीय विकल्प संगम आयोजित किए जा चुके हैं। पहला अक्तूबर २०१४ में आंध्र प्रदेश में टिम्बकटू कलेक्टिव के क्षेत्र में आयोजित किया गया था, दूसरा फरवरी २०१५ में तमिलनाडु में सेंटर फॉर एक्सपीरियेंसिंग सोशियो-कल्चरल इंटरेक्शंस (सीईएसईआई) में, व तीसरा लेह (लद्दाख) में जुलाई २०१५ में लेडेग संस्था में आयोजित किया गया। अगले कुछ सालों के दौरान ऐसे कई क्षेत्रीय और विषय आधारित संगम आयोजित किए जाएंगे।

पहले (बाएं) और दूसरे विकल्प संगम (दाएं) में आए सहभागियों के उत्साह की एक झलक।

पुआल और बांस की छत वाला षटकोणीय आवास (ऊपर बाएं) टिम्बकटू कलेक्टिव में मुख्य सभा स्थल था। यहां सहभागियों को परिसर के आसपास पुनजीवित जंगलों में सैर-सपाटे सहित मनबहलाव के भी कई अवसर थे (ऊपर मध्य)। आयोजन के आखिरी दिन स्थानीय नर्तकों ने परंपरागत नृत्य की उत्साहजनक और अविस्मरणीय प्रस्तुति दी और देश की विपुल सांस्कृतिक विविधता का अहसास कराया (ऊपर बाएं)।

मदुरई के निकट स्थित सीईएससीआई में आयोजित संगम एक खुले हॉल में विचारोत्तेजक चर्चाओं और आदान-प्रदान का शानदार अनुभव था। यहां कला, संगीत और रंगमंच के मिश्रण से तमिलनाडु और आसपास के क्षेत्रों में वैकल्पिक अन्वेषण की रचनाशीलता का पता चला।